SEMESTER II

I. MAJOR COURSE- MJ 2:
हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल एवं आधुनिक काल)

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04)60 Hours

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा – :

1. विद्यार्थियों को भारतवर्ष की 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य आदि का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इस काल के साहित्यकार और उनकी रचनाओं से वे परिचित हो सकेंगे।
3. इस काल के साहित्य का भावात्मक और रसात्मक प्रभाव ज्ञान प्राप्त होगा।
4. इससे सृजन के काव्यरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. इससे साहित्य सृजन के आधार हिंदी भाषा और मौलिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।
6. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
7. विद्यार्थी राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे।
8. छायावाद काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई-1. रीतिकाल का नामकरण और कालसीमा, रीतिकालीन परिस्थितियाँ, रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन काव्यधाराएँ, रीतिकाल के कवि, चिंतामणि, मतिराम, बिहारी, घनानंद, पद्माकर, भूषण का परिचय।

इकाई-2. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, हिंदी गद्य का विकास, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग ।

इकाई -3.आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ –भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग।

निर्धारित कवि और कविताएँ :

1. भारतेंदु- गंगा वर्णन।
2. मैथिलीशरण गुप्त – मातृभूमि।
3. जयशंकरप्रसाद– हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, बीती विभावरी जाग री।
4. निराला – भिक्षुक, भारती वंदना।
5. पंत- प्रथम रश्मि, नौका विहार, ताज।
6. महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली, मधुर- मधुर मेरे दीपक जल।

अनुशंसित पुस्तकें -:

1. काव्य कुसुम (सं.) - डॉ. हीरानंदन प्रसाद, डॉ. जितेंद्रकुमार सिंह, डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचन्द्र शुक्ल
3. हिंदी साहित्य का इतिहास – सं.डॉ. नगेन्द्र
4. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपति चंद्रगुप्त
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
7. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. हिंदी साहित्य का इतिहास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र
10. हिंदी रीतिकाव्य – डॉ. भगीरथ मिश्र
11. बिहारी का नया मूल्यांकन-डॉ.बच्चन सिंह
12. बिहारी बोधिनी – लाला भगवानदीन
13. घनानंद का काव्य – डॉ.रामदेव शुक्ल
14. स्वर्ण मंजूषा – नलिनविलोचन शर्मा, केशरी कुमार (सं)
15. आधुनिक हिंदी काव्य प्रवृत्तियाँ – डॉ.नामवर सिंह
16. कविता के नए प्रतिमान – डॉ.नामवर सिंह
17. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास – डॉ. नंदकिशोर नवल
18. कविता के आर पार – डॉ. नंदकिशोर नवल
19. ज्योति विहग - डॉ. शांतिप्रिय द्विवेदी
20. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ.रामविलास शर्मा
21. छायावाद की प्रासंगिकता - रमेशचंद्र शाह

घनानंद

घनानंद का जन्म सन् 1689 में दिल्ली में हुआ। जाति के ये भटनागर कायस्थ थे। युवावस्था प्राप्त होने पर ये दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रँगीले (सन् 1719–48) की नौकरी में आ गए और आगे चलकर ये उनके 'मीर मुशी' हो गए। बचपन से ही काव्य और संगीत की ओर इनका झुकाव था। ऐसा कहा जाता है कि बादशाह को एक दरबारी वेश्या सुजान पर ये आसक्त थे। एक बार कुछ दरबारियों ने बादशाह से इनके गाने की प्रशंसा की। बादशाह ने जब इनसे कुछ सुनाने के लिए आग्रह किया, तो ये टालमटूल कर गए। उस पर किसी षड्यत्रंकारी ने मुस्कराकर कहा कि यदि यही बात सुजान ने कही होती तो ये अभी गाने लगते। बादशाह ने सुजान को वहीं बुलाकर आज्ञा दी कि गाने के लिए कहे। उसके कहने पर इन्होंने बादशाह की ओर से पीठ कर ली और उसे लक्ष्य करके गाने लगे। बादशाह इनके गायन पर जितने प्रसन्न हुए, अशिष्टता पर उतने ही अप्रसन्न। रूष्ट होकर उन्होंने इन्हें नगर छोड़कर चले जाने की आज्ञा दी। जाते समय ये सुजान के द्वार पर गए और उससे भी साथ चलने के लिए कहा, पर वह क्यों सहमत होती? इससे ये बड़े मर्माहत हुए और विरक्त होकर वृन्दावन में जा बसे। वहाँ निंबार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हो गए। भक्त होने पर भी सुजान को ये विस्मरण नहीं कर पाए। काव्य में इस शब्द का प्रयोग इन्होंने इस कौशल से किया है कि वह कृष्ण के लिए भी प्रयुक्त लगता है और इनकी प्रेमिका के लिए भी।

कृष्ण–भक्तों में कृष्णगढ़ के महाराज नागरीदास जी से इनका घनिष्ठ परिचय बतलाया जाता है। कृष्णगढ़ से इनका जो चित्र प्राप्त हुआ है, उसमें ये यन्त्र लेकर गाने की मुद्रा में वीरासन से बैठे है।

पं० रामचन्द्र शुक्ल का विश्वास है कि इनकी मृत्यु नादिरशाह के आक्रमण के समय (सन् 1739 में) उसके सिपाहियों के हाथों से वृन्दावन में हुई। किसी ने कह दिया कि मुहम्मदशाह के मीर मुंशी के पास बहुत धन है। अतः सिपाहियों ने आकर इनसे कहा 'जर' 'जर' 'जर' अर्थात धन दो। इन्होंने धरती से धूल उठाकर उत्तर दिया : 'रज' 'रज' 'रज' अर्थात मेरे पास

तो यह धूल है। इस पर क्रुद्ध होकर सिपाही ने उनका वह हाथ ही तलवार से उड़ा दिया। थोड़ी देर-में इनकी मृत्यु हो गयी। इसके विपरीत नयी खोज के आधार पर पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का कहना है घनानंद नादिरशाह के आक्रमण में नहीं, बल्कि अहमद शाह अब्दाली के दूसरे आक्रमण में सन् 1760 में मथुरा में मारे गये। मृत्यु के सम्बन्ध में इसी तिथि को ठीक समझना चाहिए। इनके जन्म और मृत्यु की तिथियों के सबन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इनका जीवन-काल सन् 1689 से 1739 तक, लाला भगवानदीन 1658 से 1739 तक और पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र 1673 से 1760 तक मानते है।।

मिश्र जी ने अपने ग्रन्थ 'धन आनन्द' में वृन्दावनवासी 'आनंद घन' के अतिरिक्त नंदगाँववासी 'आनन्द घन' और एक जैन 'आनन्द घन' का उल्लेख किया हैं इनके अनुसार हमारे 'घन आनन्द' सखी सम्प्रदाय के उपासक थे और उनका गुप्त नाम 'बहुगुनी' था। मिश्र जी का यह भी कहना है कि सुजान भी कवयित्री थी और 'प्रवीनराइ' के समान सुजान तथा 'सुजानराइ' के नाम से कविता करती थी।

घनानन्द के छोटे-बड़े चालीस गन्थ अब तक मिल चुके हैं। इनमें सुजान-हित और पदावली मुख्य हैं। व्रजभाषा के प्रमियों में सुजानहित 'सुजान-सागर' के नाम से प्रसिद्ध है। इनके ग्रन्थों में वियोग-बेलि, इश्कलता और प्रेम-पत्रिका के नाम भी हम ले सकते है।

छंद के आग्रह से इन्होंने कहीं 'घन आनंद' लिखा है, कहीं 'आनंद घन'। इस आधार पर साहित्य के इतिहासकारों और आलोचकों ने भी इनका नाम 'घन आनंद' दिया है। इनका वास्तविक नाम घनानंद ही समझना चाहिए।

रीति-काल (सन् 1650-1850) में तीन प्रकार के कवि पाए जाते हैं- रीतिबद्ध कवि, रीति का अनुसरण करने तथा रीति-मुक्त कवि। कुछ कवि ऐसे हैं जिन्होंने लक्षण-ग्रंथों का निर्माण किया है, जैसे चिंतामणि त्रिपाठी, देव, मतिराम, भिखारीदास, कुछ ऐसे जिन्होंने इस आशय से कोई ग्रंथ तो नहीं लिखा पर उनके काव्य से रस, अलंकार, नायिका-भेद के श्रेष्ठतम उद्धरणों का चयन किया जा सकता है, जैसे बिहारी और कुछ ऐसे जिन्होंने किसी परिपाटी के पालन के लिए नहीं वरन हृदय के आग्रह से काव्य का सृजन किया है, जैसे ठाकुर, बोधा, आलम, रसखान आदि। यह वर्गीकरण वैसा ही है जैसे आधुनिक युग में किसी वाद के प्रवर्तक कवि उससे प्रभावित कवि, और उससे मुक्त कवि। घनानंद की गणना तीसरी श्रेणी के स्वच्छंद कवियों में होती है।

यह कोयल कूक-कूक कर न जाने किस जन्म का वैर निकाल रही है, मोर और चातक भी कान फोड़ रहे हैं, पुरवैया हवा अंगों को जला रही है। लगता है प्रकृति के ये सभी उपादान दल वांधकर वियोगी घनानन्द को सताने का प्रण ठानकर एकत्र हो गए हैं :

कारी कूर कोकिला कहां को वैर काढ़ति री।
कूकि-कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै।

(8) **सन्देश प्रेषणीयता**—विरही प्रायः प्रिय के पास अपनी विरह वेदना का सन्देश प्रेषित करने के लिए किसी न किसी की खोज में रहते हैं। घनानन्द ने 'वादल' को अपना सन्देश वाहक वनाकर यह अनुरोध किया है कि उस विश्वासघाती सुजान के आँगन में मेरे आँसुओं को ले जाकर वरसा दो :

घन आनन्द जीवन दायक हौ कछु मेरिऔ पीर हियै परसौ।
कबहूं वा विसासी सुजान के आँगन मो अंसुवानि हू लै वरसौ॥

इसी प्रकार वे पवन से यह आग्रह करते हैं कि प्रिय की चरण रज ले आ, मैं उसे अपनी आंखों से लगाकर शांति पा लूंगा :

ए रे वीर पौन तेरो सवै ओर गौन वीरी
तोसो और कौन मनै ढरकौंही वानि दै।

दिनकर जी ने घनानन्द के विरह पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि **"वे अपने आंसुओं से रो रहे हैं, किराए के आँसुओं से नहीं।"** इस सात्विकता एवं उदात्तता के कारण ही घनानन्द को यदि विरह-सम्राट कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

घनानन्द की काव्य दृष्टि

घनानन्द हिन्दी के उन विरले कवियों में हैं जिनका अनुभूति पक्ष जितना सशक्त है, उतनी ही सामर्थ्य उनके अभिव्यक्ति पक्ष में भी है। उनकी अनुभूतियां लाक्षणिक भाषा एवं कलात्मक सौन्दर्य से ओतप्रोत होने के साथ-साथ सरल, मधुर और लयात्मक भी हैं। गेयता उनकी कविता का सबसे वड़ा गुण है। घनानन्द सरल, सहज भाषा के कवि हैं। ब्रजभाषा का माधुर्य उनके कवित्त सवैयों में अपने चरम उत्कर्ष पर विद्यमान है। घनानन्द की काव्य दृष्टि की समीक्षा निम्न शीर्षकों में की जा सकती है :

(अ) अनुभूति पक्ष

(1) **सौन्दर्य चित्रण**—घनानन्द प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। अपनी प्रेयसी सुजान के सौन्दर्य ने उन्हें मुग्ध कर रखा था। उसके अंग-प्रत्यंग का मनोहारी चित्र वे अपनी कविता में अंकित करते हैं। घनानन्द के सौन्दर्य चित्रण में अंग कांति, लावण्य का चित्रण सरस एवं मादक रूप में किया गया है। सौन्दर्य नायिका के अंग-प्रत्यंग पर इस प्रकार लदा हुआ सा है मानो वह अभी पृथ्वी पर टपक पड़ेगा।

झलकै अति सुन्दर आनन गौर छके दृग राजति कानन छ्वै।
हंसि वोलनि में छवि फूलन की वरषा उर ऊपर जाति है ह्वै॥

(2) **रस निरूपण**—घनानन्द के काव्य में शृंगार रस की प्रधानता है। शृंगार के दोनों ही पक्ष संयोग और वियोग का निरूपण उनके काव्य में प्रमुखता से हुआ है। घनानन्द की प्रसिद्धि वियोग चित्रण के कारण अधिक रही है। विरह व्यथित हृदय की कोई ऐसी वृत्ति नहीं है जिसका चित्रण घनानन्द ने न किया हो। वे विरह सम्राट की पदवी पाने योग्य हैं।

वियोग शृंगार में तो घनानन्द को विशिष्टता प्राप्त है। सुजान रूपी वादल अव कहीं कौंधते भी नहीं, न जाने वे कहां छा रहे हैं और इधर प्राण रूपी चातक उनके लिए तरस रहे हैं, तप रहे हैं।

घन आनन्द जीवन मूल सुजान की कौंधन हू न कहूं दरसै।
सु न जानिए धौं कित छाय रहे दृग चातक प्रान तपै तरसैं॥

(3) **प्रकृति चित्रण**—घनानन्द के काव्य में प्रकृति की मनोहर छटा अंकित हुई है। आलम्वन रूप की अपेक्षा उन्होंने प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण अधिक किया है।

प्रकृति का चित्रण अलंकार रूप में भी उन्होंने किया है तथा प्रकृति के उपादान पवन को दूत वनाकर प्रिय के पास भेजने की कामना विरहिणी करती है और उससे अनुरोध करती है कि प्रिय की चरण धूलि ले आ जिसे मैं अपनी आंखों में लगाकर कुछ तो शांति पा लूं। यथा :

ए रे वीर पौन तेरो सवै ओर गौन वीरी
तोसो और कौन मनै ढरकौंही वानि दै।

(4) **भाव निरूपण**—घनानन्द की कविता विविध भावों का भण्डार है। उनके भाव अत्यन्त मार्मिक एवं हृदयद्रावक हैं। ये भाव प्रेम प्रेरित हैं इसीलिए अत्यन्त प्रभावोत्पादक वन पड़े हैं। प्रिय के वियोग में प्राण कैसी व्याकुलता अनुभव करते हैं, इसका चित्रण करते हुए कवि ने स्मृति, विषाद, आवेग, ग्लानि जैसे मनोभावों का समावेश इस सवैया में किया है :

रैन दिना घुटिबो करैं प्रान झरैं अंखियां दुखियां झरना सी।
प्रीतम की सुधि अंतर में कसके सखि ज्यों पँसरीन में गाँसी॥

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहना अधिक समीचीन है कि घनानन्द के काव्य में अनुभूति पक्ष अत्यन्त सशक्त, मार्मिक एवं हृदय द्रावक है। उनकी कविता में भावों की गहनता एवं गम्भीरता है और वह पाठकों के हृदय पर अपना स्थायी प्रभाव उत्पन्न करती है।

(ब) अभिव्यक्ति कौशल

(1) **भाषा**—घनानन्द की भाषा सरस ब्रजभाषा है। वे ठेठ ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। घनानन्द ब्रजभाषा मर्मज्ञ थे। ब्रजभाषा पर उनका असाधारण अधिकार था। उनकी भाषा में भाव निरूपण की अद्भुत क्षमता थी।

घनानन्द की भाषा में उक्ति चमत्कार भी व्याप्त है। इन उक्तियों के प्रयोग से उनकी कविता में अर्थ गांभीर्य का समावेश हुआ है। यथा :

मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर
अमोही के मोह मिठास ठगी।

घनानन्द की भाषा में लाक्षणिक पदावली का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। ऐसे कुछ लाक्षणिक प्रयोग द्रष्टव्य हैं :

मीत सुजान अनीति की पाटी
इते पै न जानिए कौनें पढ़ाई।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द की भाषा की प्रशंसा करते हुए कहा है :

"यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं। घनानन्द जी उन विरले कवियों में हैं जो भाषा की व्यंजकता वढ़ाते हैं। भाषा के लक्षक और व्यंजक बल की सीमा कहां तक है, इसकी पूरी परख इन्हीं को थी।"

(2) **अलंकार योजना**—अलंकार काव्य में चारुता का विधान करने के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति में भी सहायता पहुंचाते हैं। घनानन्द के काव्य में भी अलंकारों की योजना इन्हीं दो उद्देश्यों से की गई है। उन्हें सादृश्यमूलक अलंकार विशेष प्रिय है। इनके साथ-साथ यमक, श्लेष, अनुप्रास, विरोधाभास, प्रतीप, सन्देह, असंगति जैसे अलंकारों की प्रचुरता भी घनानन्द की कविता में दिखाई पड़ती है। यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

उपमा—**झरैं अंखियां दुखियां झरना सी।**

उत्प्रेक्षा—**अंग-अंग तरंग उठै द्युति की परिहै मनौरूप अवै धर च्वै।।**

श्लेष—**घनआनन्द जीवनदायक हौ कुछ मेरियो पीर हिये परसौ।**

यहां घनआनन्द के दो अर्थ हैं—कवि का नाम एवं आनन्द की वर्षा करने वाले वादल, इसी प्रकार जीवनदायक के दो अर्थ हैं—जीवन देने वाले और जल देने वाले।

यमक—**काहू कलपाय है सो कैसे कल पाय है।**

कलपाय शब्द दो वार प्रयुक्त है तथा दोनों बार अलग-अलग अर्थ हैं। प्रथम 'कलपाय' का अर्थ है तरसाना तथा दूसरे **कल पाय** का अर्थ है—चैन पाना।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि घनानन्द ने कथन को अलंकृत करके काव्य में सौन्दर्य का विधान तो किया ही है, साथ ही अपनी अनुभूति को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त भी किया है।

(3) **छन्द योजना**—घनानन्द ने सवैया, कवित्त, ताटंक, त्रिभंगी, दोहा, चौपाई छन्दों का प्रयोग अधिक किया है। कवित्त, सवैया उन्हें विशेष प्रिय हैं। सवैयों में भी उन्होंने दुर्मिल मत्तगयंद सवैया, किरीट सवैया अधिक प्रयुक्त किया है जबकि कवित्तों में मनहरण, धनाक्षरी का प्रयोग अधिक है।

दोहे और चौपाई का भी सफल प्रयोग घनानन्द ने अपनी कविता में किया है। उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि घनानन्द का काव्य स्वतः स्फूर्त है उसमें कोई कृत्रिमता नहीं है और न चमत्कार प्रदर्शन या पांडित्य प्रदर्शन का प्रयास ही उन्होंने किया। वे तो अपनी हार्दिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में ही कवि कर्म की सार्थकता समझते थे।